दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को
चिमनबाग, इन्दौर, मध्य प्रदेश की जनसभा में
प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

.....

बहनो और दोस्तों,

मुझको याद पड़ता है कि सन् सड़सठ में, मैं एक बार आपके यहां एक आम सभा में बोल चुका हूं। जब बहुत से सूबों में, हम बहुत से कांग्रेसियों ने कांग्रेस को छोड़ा था और भारतीय क्रांति दल की स्थापना हुई थी, तो उनके प्रतिनिधियों की एक मीटिंग इन्दौर में हुई थी। उस सिलसिले में, मैं भी हाजिर हुआ था यू0पी0 की तरफ से, तब मुझको याद पड़ता है कि यहां सार्वजनिक सभा हुई थी।

अब देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आने वाली गवर्नमेंट, जो कि जनवरी में आप लोग चुनेंगे, वो कौन से दल की हो, किसकी हो ? आज तीन बड़े दल कहे जा सकते हैं जो कि वोट के लिए आपके पास आयेंगे। एक तो जनता पार्टी, जनता पार्टी कहने के लिए है, जनता पार्टी बन नहीं पायी थी। जनता पार्टी बनाने की हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी। हम सब ने उसके लिए काम किया था। लेकिन वो अलग–अलग गुटबाद उसमें बना रहा, घटकवाद बना रहा। तो जो जनता पार्टी है, इसमें कांग्रेस को, हमारे जनसंघ के दोस्त और कुछ थोड़े–से सोशलिस्ट और कुछ कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी अर्थात् 15–16 आदमी जगजीवनरामजी के साथ हैं। जगजीवन रामजी उनके लीडर हैं।

एक जनता पार्टी है, दूसरी इंदिराजी की कांग्रेस और तीसरा ये भारतीय लोकदल या लोकदल और जो लोग कांग्रेस के साथ बहुत दिनों से काम करते रहे हैं, लीडरान थे, लेकिन इंदिराजी से नाखुश थे और इंदिराजी इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि अपनी गलती को स्वीकार करें, वो कांग्रेस को छोड़ के चले आये थे–– उनका और हमारा गठबंधन है। ये तीसरी पार्टी है।

तो, इस तीसरी पार्टी की तरफ से यह सभा आयोजित की गयी है और मैं आपको यह सलाह देना चाहता हूं कि इस लोकदल के गठन को आप लोग वोट दें। सवाल उठता है कि क्यों? मेरा जवाब यह है, जैसा कि अभी उसकी वैध जानकारी हो जाएगी कि देश की जो चार बड़ी समस्याएं हैं, उनका समाधान लोकदल और कांग्रेस के अलावा और किसी पार्टी के पास नहीं।

चार बड़ी समस्याएं हैं देश के सामने–गरीबी, बल्कि गरीबी नहीं, बढ़ती हुई गरीबी, अफसोस के साथ कहना पड़ता है। बेरोजगारी, वो भी दिन–ब–दिन बढ़ती हुई बेरोजगारी। गरीब और अमीर के बीच की जो खाई, उसका बढ़ते जाना। चौथा, यह कि भ्रष्टाचार, अनाचरण, दुराचरण–– प्रशासन में भी और राजनीतिक नेताओं में भी। ये चार बड़ी समस्याएं हैं।

जहां तक गरीबी का ताल्लुक है दोस्तों, 125 देश हैं जिनकी दस लाख से अधिक आबादी है और जिनके आंकड़े यूएनओ की, संयुक्त राष्ट्र संगठन की तरफ से या बर्ल्ड बैंक की तरफ से प्रकाशित होते हैं। आमदनी के मामले में 65–66 में हमारे देश का नम्बर 85वां था 125 में, 84 देश हमसे मालदार, 40 देश हमसे गरीब। आठ साल के बाद, सन् 73 में हमारा

नम्बर 104 हुआ, 103 देश हमसे मालदार, 21 देश हमसे गरीब। उसके ठीक तीन साल बाद, सन् 76 में, जिसके आंकड़े मिलते है, उसके बाद के आंकड़े नहीं मिलते है। हमारा नम्बर 111 हुआ। आठ पोजीशन नीचे हिन्दुस्तान गिरा। आज केवल 14 देश आपसे गरीब हैं और 110 देश आपसे मालदार हैं। उन 14 देशों में तीन या चार छोटे–छोटे देश हैं, जिनका आपने नाम सुना होगा! बाकी दस देश ऐसे हैं, जिनका इतिहास में जिकर नहीं है। जिनका दुनिया ... हिन्दुस्तान .. उसके संसार के मानचित्र पर भी शायद नाम नहीं पायेगा, मुश्किल से ढूंढे पायेगा। भूटान एक मुल्क आपसे गरीब, नेपाल आपसे गरीब, वर्मा आपसे गरीब और बंगलादेश आपसे गरीब और दस छोटे'–छोटे और देश जिनकी आबादी दस लाख से ज्यादा है, तो लगभग सभी देशों से गरीब, कोई हरज नहीं गरीब थे, गरीब हैं। लेकिन तीस साल की आजादी के बाद, दूसरे देशों की अपेक्षा गरीबी घटी नहीं, बल्कि बढ़ती चली गयी, बढ़ती चली गयी, तो अब हम नीचे कम से कम लास्ट, लोएस्ट रन पर पहुंच गए हैं, बाटम पर पहुंच गये हैं।

इतनी गरीबी? प्लानिंग कमीशन के अनुमान के अनुसार, 48 फीसदी आदमी देश के अन्दर ऐसे हैं जिनको यथेष्ट भोजन नहीं मिलता है, क्योंकि देश गांवों के अन्दर रहता है, तो अधिकतर लोग वहीं हैं। लेकिन यह बात नहीं कि शहरों में गरीब न हों। हमारे प्लानिंग कमीशन का अनुमान है, आंकड़े हैं उनके पास कि 41 फीसदी आदमी शहरों के लिए गरीब हैं। जो बड़े–बड़े महल हैं अहमदाबाद में या दिल्ली या बम्बई में बने हुए हैं, इन गगनचुम्बी इमारतों के पीछे वो लोग रहते हैं, जो सड़क पर चलने वालों को दिखायी नहीं देते। ऐसे भी लोग हैं कलकत्ते जैसे शहर में, हमारे बहू–बेटियों के बच्चे सड़क पर पैदा होते हैं। मकान भी उनके पास रहने को नहीं हैं सबसे मालदार शहर माना जाता है देहली। 26 फीसदी वहां के भी आदमी गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं ...बिलो दि पावर्टी लाइन। ये है गरीबी का हाल।

जहां तक बेरोजगारी का सवाल है, अंग्रेज जब गये थे, तो प्लानिंग कमीशन का अनुमान है कि बड़ी मुश्किल से पांच लाख आदमी बेरोजगार रहे होंगे। आज करोड़ों बेरोजगार शहरों में हैं और करोड़ों –– करोड़ों –– करोड़ों देहात में हैं, गांव में।

जब जनता पार्टी ने जिम्मेदारी संभाली थी, देहली में तब एक करोड़ 2 लाख 40 हजार लड़कों का नाम दर्ज था एम्पलायमेंट एक्सचेंज में, शहर में जो कामदिलाऊ दफ्तर गवर्नमेंट की तरफ से खुले हुए हैं, उनके अन्दर नाम दर्ज था कि हम रोजगार चाहते हैं, हमकों रोजगार नहीं मिला। जब यह गवर्नमेंट गयी है, उस वक्त एक करोड़ 35 लाख लड़कों का नाम था। हाईस्कूल पास, इंटर पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, साइंस की डिग्री में एम0एस0सी0, डाक्टर, इंजीनियर्स, इलेक्ट्रीशियन्स, कैमिकल इंजीनियर्स, सिविल इंजीनियर्स, तरह–तरह के विद्या प्राप्त हमारे लड़के। और हजारों उनमें से बाहर जाते हैं रोजगार के लिए।

मुझको ऐसे भी केसेज मालूम हैं कि लड़का हर क्लास में फर्स्ट आता चला गया, अब बेरोजगार था, मेरे पास आया था –– 67 की बात आपको बताता हूं, लखनऊ में। मां–बाप पेट पर पट्टी बांधकर बच्चों को पढ़ाते हैं और अपने देश में रोजगार नहीं मिलता। अर्थशास्त्रियों का अनुमान यह है कि हमारे देश के औसतन 65 किसान, साल भर में जितनी आमदनी उनकी होती है, तो हमारे यहां एक लड़के को ग्रेजुएट बनाने पर उतना खर्चा होता है। और इतना इस गरीब देश का खर्चा होने के बाद इन बच्चों की, इन नौजवानों की काबिलयत और पुरूषार्थ से इस देश का फायदा होने के बजाय, अमरीका और इंग्लैंड और

जर्मनी जैसे दशों को होता है, जो कि पहले से मालदार हैं। हमारे ऐसे लड़कें हैं, जो हर साल बाहर जाते हैं, पढ़ने के लिए और फिर लौटकर नहीं आते, क्योंकि यहां उनको रोजगार मिलने वाला नहीं।

ये तो शहर की बात। देहात का यह हाल है कि अंग्रेज जब गये थे तो 17 फीसदी आदमी एग्रीकल्चरल लेबरर था, खेतिहर मजदूर । आज उनकी तादाद साढ़े 26 फीसदी है। किसानों का एक सेन्सस लिया गया 1970–71 में तो 33 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास जमीन दो बीघे से कम है, दो बीघे नहीं है, दो बीघे तक है, दो बीघे से कम। 18 फीसदी किसान जो कहलाते हैं उनके पास दो बीघे से चार बीघे। आधा हेक्टेयर से एक हेक्टेयर। ये 51 फीसदी किसान हैं, जिनको किसान यूफेमिस्टकली कह सकते हो अंग्रेजी में, नाम के लिए कह सकते हो, उनकी शोभा बढ़ाने के लिए कह सकते हो। लेकिन ये किसान नहीं हैं, इनको चाहे कितनी मेहनत करें, अपनी थोड़ी–सी जमीन पर इनकी गुजर ईमानदारी से उसमें हो नहीं सकती है। उनको भी मैं बेरोजगार मानता हूं, यह देहात का हाल है।

यहां प्रकृति ने, इतिहास ने हमको जो जमीन दी है, भारतवर्ष को, उसका क्षेत्रफल तो बढ़ेगा नहीं, बढ़ नहीं सकता, लेकिन हमारी जनसंख्या बढ़ती जा रही है, तेज रफ्तार से न बढ़े तो मंदी रफ्तार से बढ़ेगी, तब भी बढ़ेगी। 1857 में 18 करोड़ आबादी थी इस देश में आज पाकिस्तान और बंगलादेश को शामिल करके उसकी आबादी 85 करोड़ है। साढ़े चार गुना आबादी बढ़ गयी। जमीन ज्यों की त्यों है, वही की वही है। तो वहां बेरोजगारी उतनी ही, बल्कि शहर से भी ज्यादा है और फिर जैसे मैंने आपको आकड़े बतलाये, वो बेरोजगारी कम नहीं हो रही है, बढ़ती जा रही है, बढ़ती जा रही है, बराबर बढ़ती जा रही है।

तीसरी समस्या गरीब और अमीर का फर्क। ये मेरी पीढ़ी के लोग महात्माजी के नेत्त्व में अंग्रेजों के खिलाफ थोड़ा–बहुत संघर्ष कर रहे थे, तो हमारी तकरीरों में एक दलील यह होती थी, एक तर्क यह होता था कि अंग्रेजों के आने की वजह से बड़े–बड़े सेठ हो गये, बड़े–बड़े पूंजीपति हो गये। गरीब–अमीर का फर्क बढ़ गया। मुझको अब तक याद है कि हमने अपने लेखों में लिखा था कि 'इंडिया इज टू वर्ल्ड्स' कि हिन्दुस्तान दो संसार है– एक गांव और एक शहर। दोस्तों, वो फर्क कम होने के बजाय दुगना हो गया। आपको जानकर अफसोस होगा सन् 50–51 के आंकड़ों के अनुसार, एक गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी, तो हमारे शहर वालों की आमदनी 178 रूपए थी, पौने दो सौ मानो मोटे तरीके से। सन् 76–77 के आंकड़ों के अनुसार, अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 थी, तो शहर वाले की आमदनी 346 रूपये थी, साढ़े तीन सौ। पहले फर्क एक और पौने दो का था, अब एक और साढ़े तीन। पौने दो, दूनी साढ़े तीन।

ये हैं नीतियां। अग्रेजों के जमाने में भी सेठ थे, जिन टाटा–बिड़ला का हम नाम सुनते थे। हम समझते थे टाटा और बिड़ला के पर कैच किये जाएंगे स्वराज होने के बाद। लेकिन नहीं दोस्तों! उनकी तादाद भी बढ़ी और उनकी मालदारी भी बढ़ी। केवल इन दो के ही आंकड़े बता देना चाहता हूं– बिड़ला के पास 53 करोड़ रूपये की सम्पत्ति थी सन् 51 में, आज उसके पास 1100 करोड़ रू0 की सम्पत्ति है, 1100 करोड़ रू0। टाटा की सम्पत्ति 113 करोड़ रू0 थी, उनकी भी 1100 करोड़ की है, थोड़ा फर्क, बिड़ला की जायदाद 19 गुना बढ़ी, टाटा की जायदाद नौ गुना बढ़ी। तो यह फर्क होता जा रहा है। मैं जानता हूं एक आदमी और दूसरे आदमी की काबिलियत में फर्क होगा, कुदरती बात है। कभी बराबर आमदनी हो

नहीं सकती, दुनिया में चाहे कभी कोई कोशिश करे, चाहे कोई कम्यूनिस्ट पार्टी कोशिश करे, चाहे रशिया कोशिश करे फर्क रहेगा। लेकिन गवर्नमेंट और पार्टी वही अच्छी मानी जाएगी, जिसके कार्यकाल में, जिसके अहद में यह फर्क कम होगा और वो पार्टी निकम्मी और बेकार साबित होगी जिसके अहद में यह फर्क बढ़ जाये, यह खाई और चौड़ी हो जाए। तो खाई चौड़ी हुई है, तीस साल के स्वराज के अन्दर बजाय कम होने के।

और चौथी समस्या है – भ्रष्टाचार की। हम लोग सब कांग्रेस वाले यह जानते थे कि रिश्वत चलती है गवर्नमेंट के अन्दर, लेकिन उस जमाने में हमने कभी यह नहीं सुना था कि दिल्ली या लखनऊ या बाम्बे में कोई मिनिस्टर भी बेईमान था। नहीं, हमको याद नहीं। हम तो तब उस दिन का सपना देखा करते थे कि जब देश आजाद हो जाएगा तो हमारे कर्मचारियों में जो रिश्वत है, उसको खत्म करेंगे। लेकिन दोस्तों, वो सपने सब भंग हो गये, सब भंग हो गये। आज राज्य–कर्मचारियों में उतनी ही रिश्वत है। शायद बढ़ी। मैं उनको दोष नहीं देना चाहता। अगरचे दोषी जरूर हैं; दोष यूं नहीं देना चाहता कि इसकी जिम्मेदारी राजनीतिक नेताओं पर अधिक है, बनिस्बत उनके। अगर तुम्हारे सूबे का चीफ मिनिस्टर और गृहमंत्री, अगर हिन्दुस्तान का प्राइम मिनिस्टर या कोई भी मिनिस्टर अगर ईमानदार नहीं होगा, और गैर–ईमानदार होगा, तो देश उठ नहीं सकता। आपका सूबा उठ नहीं सकता है, दोस्तों! (तालियां, नारे) !

और, यही जरूरी नहीं है। हमारे यहां पुरानी एक कहावत है, संस्कृत का एक श्लोक है कि महाजन (महान लोग) जिस रास्ते चलते हैं, सर्वसाधारण उसी रास्ते चलते हैं। बड़े आदमियों के लिए यही जरूरी नहीं है कि ईमानदार हो, बल्कि जनता को विश्वास हो कि वो ईमानदार है। तो, भ्रष्टाचार बजाय कम होने के बढ़ता जा रहा है। दोस्तों, इन चार कारणों से देश की जो अधोगति हो चुकी है, बयान करने से वो बाहर है, देश को बचाने का सवाल नहीं है, बल्कि डूबने जा रहा है वो। बचा लो दास्तों! मेरे ––(खांसी) मेरे ख्याल से देश डूब चुका है, उसका सालवेज करना है, उसको निकालना है। कैसे हो ?

एक ही रास्ता है और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। वो रास्ता है, वो जो महात्मा गांधी ने हमको बतलाया था, उसी पर चलें। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं नहीं है। महात्मा यह कहता था कि 'रीयल इंडिया लिब्ज इन द विलेजिस, नाट इन बाम्बे और देहली' –खेती करता है, खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो। खेत की पैदावार हमारे किसानों की बढ़ेगी, बाजार में वो कुछ बेचेगा, उसके पास पैसा आयेगा। उधर दुकानदारों की तादाद बढ़ेगी। दुकानदार, ट्रांसपोर्ट भरकर और ट्रक भरकर माल बाहर भेजेंगे, तो तिजारत बढ़ी, ट्रांसपोर्ट बढ़ा और जब किसान की जेब में पैसा आया, उसने जूते, साबुन, कपड़ा, बच्चों के लिए और जरूरी चीजें, स्कूल–कालेज में पढ़ता है तो उसकी फीस, उसके लिए अगर वो साइकिल चाहता है, घड़ी चाहता है, तो घड़ी और साइकिल खरीदेगा। मकान पक्का बनायेगा तो सीमेंट–लोहा खरीदेगा। हजार जरूरतें हैं। खाद अच्छा खरीदेगा, खेत में डालने के लिए। बैल अच्छे खरीदेगा। गरज है कि हजार चीजें हैं आदमी की जरूरत की, जो खेत में पैदा नहीं होतीं। जूता भी खेत के अन्दर पैदा नहीं होता है, तो उन चीजों को खरीदेगा, तो उन चीजों के बनाने वाले लोगों की तादाद बढ़ जायेगी, इंडस्ट्री बढ़ जाएगी, उद्योग–धंधे बढ़ जाएंगे और जो पैसा उसको मिला है, किसान को अपनी पैदावार बेचकर, उस पैसे के बदले वो उस सामान को खरीदेगा, तो उद्योग–धंधे बढ़ते चले जाएंगे।

खेतों के अलावा तीन ही बड़े पेशे हैं– ट्रेड, ट्रांसपोर्ट एंड इंडस्ट्री। तिजारत, परिवहन और उद्योग–धंधे, छोटी–छोटी और हजार चीजें हैं, वो सब निर्भर करती हैं किसान की पैदावार बढ़ने के ऊपर। अगर आस–पास के आपके किसानों की पैदावार, हमारे देश के खेतों की पैदावार अगर दुगनी–तिगुनी हो जाती है, दूसरे देशों में यहां से कई गुना ज्यादा पैदावार है, दोस्तों, तो यह देश दस साल के अन्दर मालदार हो जाएगा। (शोर)

ये लोग वो हैं कि अगर एक बार इनका राज हो गया, तो ये कभी इलेक्शन कराने वाले नहीं हैं, ये बतलाये देता हूं। ये डंडे से धमकाने वाली पार्टी है।

आपने देखा कि जानबूझकर आरगेनाइज्ड तरीके से, संगठित तरीके से इन लोगों ने शोर मचाना शुरू किया। अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हों, तो आना नहीं चाहिए था यहां और आये हो तो शांति से बैठना चाहिए। ये शराफत की और सभ्यता की बात नहीं है कि सभा में आकर हुल्लड़ करो। ये तुम्हारे लीडरों ने सिखाया है। ये वो लोग हैं जो हिन्दुस्तान में डिक्टेटरशिप कायम करना चाहते हैं, जो दूसरे की मीटिंग सुनना नहीं चाहते। जनतंत्र में, डेमोक्रेसी में हर आदमी को सभा कर अपनी बात कहने का अधिकार है, अगर मेरी बातें नापसंद हैं, आप दूसरी सभा कर सकते हो। कानून में यह लिखा हुआ है कि जो किसी की मीटिंग में विघ्न डालेगा, वो सजा का मुंतकित है। अगर चाहे तो ये जो ईमानदार और शरीफ घरों के लोग आये हुए हैं इन्हें जेल भेज सकती है पुलिस अगर चाहे। लेकिन मैं यह नहीं चाहता हूं, मैं केवल इनको ये चेतावनी देना चाहता हूं कि किस तरह आप इस लोकदल की सभा में विघ्न डालना चाहते हैं (खांसी), तो दूसरे लोग भी विघ्न डालना चाहते हैं आपके लीडरों की मीटिंग में, फिर हिन्दुस्तान में कहीं नहीं हो सकेगी, कहीं नहीं हो सकेंगी सभाएं।

क्या मायने होते हैं इस बात के? अब दो पढ़े लिखे लोग अपने–आपको बताते हैं। बस, एक हुकुम निकलता है नागपुर से। अपनी अकल उन्होंने मारगेज की हुई है, रहन की हुई है, बेची हुई है इन लोगों ने। ये वो लोग हैं जो हिन्दुस्तान के सब रहने वाले लोगों के साथ एकसा बर्ताव नहीं चाहते, जिनके सामने मुसलमान और ईसाई का कोई स्थान मुल्क के अन्दर नहीं। हमारी पार्टी में और सारे हिन्दुस्तानी इस मुल्क को अपनी मदरलैंड समझते हैं, मातृभूमि समझते हैं, सब के समान अधिकार हैं। ये यही नहीं कि हिन्दुओं का राज चाहते हों, लेकिन हिन्दू राष्ट्र का नाम गलत लेते हैं या एक या दो बिरादरी का ये राज चाहते हैं और इससे ज्यादा का राज नहीं चाहते हैं, ये लोग हैं ईमानदाार? जरा देखो, क्या यह शराफत की बात है? मैं एक बात कह रहा था, जिसको ध्यान से, सब लोग ध्यान से सुन रहे थे; और बीच में खड़े होकर हुल्लड़ करना शुरू कर दिया।

तो, मैं आपसे कह यह रहा था कि किसानों की जब पैदावार बढ़ेगी, तो दूसरे पेशे बढ़ेंगे। साथ ही मैं यह कहना चाहता हूं, अहमदाबाद के लोगों, कि जिस देश में किसानों की तादाद ज्यादा होती है और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद कम होती है, वो देश गरीब होते हैं। हिन्दुस्तान में जब अंग्रेज आये थे, तब 60 आदमी खेती करता था सौ के पीछे, 25 आदमी उद्योग–धंधों में लगे हुए थे। आज 60 की बजाय 72 आदमी खेती करते हैं। उद्योग–धंधों में लगे हुए लोगों की तादाद 25 के बजाय दस हो गयी, बल्कि नौ हो गयी। लिहाजा आज देश गरीब है। बजाय बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं बड़े–बड़े शहरों में बन जाने से, लाखों मोटरकार हो जाने, लाखों फ्रिज हो जाने, लाखों रेडियो हो जाने, लाखों टेलीबिजन सेट हो जाने के आज औसत हिन्दुतानी गरीब है, बनिस्बत दो सौ बरस पहले के।

अंग्रेजों ने आकर हमारी दस्तकारियों का सत्यानाश किया। अपने कारखानेदारों के हक में। हमारे यहां का हाथ का बना हुआ कपड़ा इतना नफीस बनता था कि अंग्रेजों के मुल्क के रहने वाले अंग्रेज लोग अपने यूरोप शहर प्रेंसली, लिबरपूल, शहर के, जो लंकाशायर कारखाने उनके मुल्क में लगे थे, उनके बने हुए कपड़े के मुकाबले में हिन्दुस्तान के हाथ के बने हुए कपड़े को पसंद करता था। इन लोगों ने 50 फीसदी उस पर टैक्स लगा दिया, इम्पोर्ट ट्यूटी। तब भी उन लोगों ने पहनना नहीं छोड़ा, उन्होंने फिर 80 फीसदी टैक्स लगा दिया, तब भी वहां के लोग, कुछ मालदार लोग पहनते रहे।

'भारत में अंग्रेजी राज' एक पुस्तक लिखी है पंडित सुन्दरलालजी ने, जो हमारी खुशकिस्मती से अभी जिंदा हैं। उनकी 95 बरस की उमर है। सन् 1912 में जिन्होंने लार्ड हार्डिंग पर बम डाला था, नौजवानों के जिस ग्रुप ने, उस ग्रुप में शामिल थे। उस किताब में उन्होंने यह लिखा है कि सन् 1817 में जब वहां के मालदार घरों की बहू–बेटियों ने हिन्दुस्तान के हाथ के कपड़े को पहनना नहीं छोड़ा, नहीं बंद किया, तो कानून बनाया ब्रिटिश पार्लियामेंट ने कि हिन्दुस्तान के हाथ के बने कपड़े को जो इंगलिस्तान का रहने वाला पहनेगा, उसे तीन महीने की सजा दी जाएगी। इस तरह जो सबसे बड़ा उद्योग था कपड़े का, वो खत्म हो गया। तरह–तरह के उद्योग थे, कारखाने तो थे नहीं, हाथ से ही सब, सारे काम होते थे। ये वो बम्बई से देहली, मद्रास से देहली, कलकत्ते से देहली जो रेलवे लाइन उन्होंने खीची अंग्रेजों ने, वो हमारे फायदे के लिए नहीं, वो अपने उद्योग–धंधे के सामान को, अपने कारखाने के बने सामान को हिन्दुस्तान के कोने–कोने में पहुंचाना, पहुंचा देना चाहते थे और पहुंचा दिया और हमारे दस्तकार सब बेरोजगार हो गए। उस वक्त जमीन की कमी नहीं थी। लोगों ने, सब ने हल की हत्थी पकड़ी, किसानों की तादाद बढ़ी, दस्तकारों की तादाद घटी और देश गरीब हो गया।

आज अमरीका सबसे मालदार है। सौ में चार आदमी खेती करता है, 96 आमदी दूसरा पेशा करता है, लेकिन 200 बरस पहले हमारा मुल्क मालदार था अमरीका के मुकाबले में। सन् 1820 में अब से 160 बरस पहले, अमरीका में 87 आदमी खेती करता था और 13 आदमी दूसरा पेशा करता था। हमारे 60 आदमी खेती करते थे, 40 आदमी दूसरा पेशा करते थे। अगर उस वक्त के आंकड़े आमदनी के मिल जाएं, तो हिन्दुस्तान मालदार था उस वक्त। लेकिन दूसरे देश वालों का राज हो गया, हमारी सब दस्तकारियां, हमारे उद्योग–धंधे नष्ट हो गए। और अफसोस के साथ मुझको कहना पड़ता है कि जो थोड़ी–बहुत दस्तकारियां और हस्तकलाएं बची थीं गांवों में और कस्बों में, स्वराज होने के बाद हमारे लीडरों ने भी अंग्रेजों की पॉलिसी पर अमल करते हुए बड़े–बड़े कारखाने बनते रहे। रूपये ज्यादा लगते रहे, सेठ पैदा होते रहे, लड़के बेरोजगार होते चले गये और जो थोड़ी–बहुत दस्तकारी बची थी, वो भी धीरे–धीरे खत्म होती चली जा रही है।

यू0पी0 के अन्दर कालीन हाथ से बनता था। इंदिराजी ने कारखाने लगाने के, कालीन बनाने के लिए कारखानों के तीन लाइसेंस दे दिये कि कारखाने से कालीन बनेगा, क्यों? हाथ से जो कालीन बनता था यू0पी0 और बिहार के अन्दर, वो इतना नफीस था कि खास तौर से कनाडा और अमरीका के लोग बहुत पसन्द करते थे। अब मैं जब फाइनेंस मिनिस्टर हुआ, तो वो कारखाने लग चुके थे कालीन बनाने के लिए। तो मैंने 30 फीसदी टैक्स लगा दिया कारखाने के बने कालीन पर और हाथ से जो कालीन बना रहे थे, उन सब को माफ कर

दिया, ताकि गरीब लोगों को रोजगार मिले। इसी तरह मैंने दियासलाई पर, एक विमको कारखाना परदेसी आदमी का लगा हुआ है। वो परदेसी एक कैपिटलिस्ट है, तो मैंने जो उसका टैक्स था 48 फीसदी, मैने उसे कर दिया 96 फीसदी और हाथ से जो दियासलाई बनती थी, उसे करीब माफ कर दिया या नाम मात्र के लिए एक फीसदी टैक्स।

अहमदाबाद के मेरे दोस्तों और मेरी बहनों!

(श्रोताओं में से किसी ने कहा– इन्दौर के) (हंसी)

ओह! इन्दौर के; मुझे माफ करना।

अच्छा बहुत खुश हुए हैं, बहुत अच्छी बात है।

इन्दौर के रहने वाले दोस्तों, आपको जानकर ताज्जुब होगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े भारी नेता, नाम लेना मुनासिब नहीं होगा, एक जनता पार्टी की स्टेट गवर्नमेंट के चीफ मिनिस्टर और बम्बई की जनता पार्टी के एक मशहूर एम0पी0 –– तीनों ने मुझको चिट्ठी लिखी कि जो विदेशी कारखाना है, 'विमको', जो यहां बनाता है दियासलाई, इसका टैक्स आपने बढ़ा दिया, यह अच्छा नहीं किया, इसका टैक्स कम कर दीजिये। मैंने उनको तीनों को जवाब लिखा कि मीटिंगों में गरीबों की बात करते हो और अब गरीबों के हक में जब मैं काम करता हूं, सेठों पर मैं भार डालना चाहता हूं, तो सेठों के हक में खत लिखते हो। मैंने उनकी बात को नहीं माना।

तो, मैं यह कह रहा हूं कि जो छोटी–मोटी दस्तकारी बची हुई थी, वो धीरे–धीरे खत्म हो रही है, क्योंकि हम यहां के कारखानेदारों के गुलाम हो चुके हैं, करीब–करीब सब राजनीतिक नेता, बताता हूं दोस्तों! (तालियां) रुपया चाहिए इलेक्शन लड़ने के लिए। रूपया, लाखों रूपया खर्च होता है, वो रुपया कहां से आया है, वो रुपया सेठों से, पूंजीपतियों से, उद्योगपतियों से और कारखानेदारों से लिया जाता है। और जो रुपया लेकर हमारे लोग मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर बनते हैं, तो फिर वो एक अंग्रेजी की कहावत है–'ही, हू पेज दी पाइपर विल आलसो काल दी ट्यून! जो आदमी बाजा बजाने वालों को रुपया देता है, वो यह भी बतायेगा कि फलां ध्वनि निकालो और फलां गाना बजाओ या गाओ। तो जिन सेठों के रुपये से हम मिनिस्टर, एम0एल0ए0 और एम0पी0 बनते हैं तो नीतियां गरीबों के हक में नही होगी। नीतियां वो अपनायी जाएंगी, जो बड़े लोगों के हक में होंगी दोस्तों! (तालियां)

इसलिए मैंने, और मेरे साथियों ने सन् 67 में कांग्रेस को छोड़ा था और भारतीय क्रांतिदल बनाया था और फिर उसके बाद भारतीय लोकदल बनाया। उसके बाद सब पार्टियों को मिलाकर कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए मैंने एक जबरदस्त पार्टी – जनता पार्टी बनायी और मजबूर होकर हमको फिर अपने लोकदल को पुनर्जीवित करना पड़ा। तो मेरा अपने साथियों से बराबर यह कहना रहा है कि हारना इलेक्शन में मंजूर है, लेकिन सेठों का रुपया लेकर जीतना मंजूर नहीं है, दोस्तों! (तालियां)

मैं अब भी सब सभा में कहकर आया हूं और आपसे भी कहता हूं, जो आपमें से रुपया खुशी से दें, मंजूर, गरीब आदमी जितना दे, मंजूर, लेकिन लोकदल के लोग आपसे रुपया लेने नहीं आयेंगे। बड़े आदमी के सामने सिर झुकाने को मैं और मेरे साथी तैयार नहीं है, दोस्तों!

बात जरा ज्यादती की हो जाती है, ज्यादा कहना नहीं चाहता हूं, ऐसे–ऐसे लोग थे जिन्होंने कहा–चौधरी साहब, लाखों नहीं, हम करोड़ रुपये देने को तैयार हैं। बूढ़े आदमी थे,

ईमानदार आदमी थे, आज संसार में रहे नहीं, मेरा दोस्त मजबूर करके सन् 68 में उनके पास ले गया था, वो साढ़े दस महीने चीफ मिनिस्टर रहा था, उत्तर प्रदेश में। उन्होंने जो शासन की कुशलता और ईमानदारी बढ़ गयी थी, उसको देख के प्रभावित थे, दिल्ली में रहते थे। उनके लड़के अब कई कारखाने चला रहे हैं, उनके सामने भी चलते थे। लेकिन ईमानदार आदमी, धर्मात्मा आदमी, खाने पर बुलाया, अलग मुझको ले गये और मुझसे कहे कि मैं आपको रुपया देना चाहता हूं, मेरे पास रुपये की कमी नहीं हैं, पचास लाख की जरूरत है, एक करोड़ की जरूरत है? मैं चुप हो गया। बोले शायद आप इसलिए चुप हो गए कि जब आप पावर में आयेंगे, मैं उसका मुआवजा चाहूंगा, उन्होंने कहा, हरगिज–हरगिज नहीं। मैं कितने दिन जिन्दा रहूंगा, ये मुल्क तो हमेशा रहेगा और रुपया किस काम आयेगा? मैं कोई बदला नहीं चाहता।

मुझे शर्म आती है, मुझे कहनी नहीं चाहिए अपनी बाबत बात। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि आप जैसा कुशल प्रशासक, ईमानदार आदमी हिन्दुस्तान का प्रधानमंत्री हो, इसलिए करोड़ों रुपया आपको देना चाहता हूं। मैंने हाथ जोड़े उनके, सेठजी के, मैंने कहा, मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं। बेशक आप मुआवजा नहीं चाहोगे, आप धर्मात्मा आदमी हो, मुझको मालूम है, लेकिन मेरा सिर तो आपके सामने झुक जाएगा और मैं किसी के सामने सिर झुकाने को तैयार नहीं। उनके लड़के आज मौजूद हैं, लेकिन मैंने कहा कि ये एक ऐसी बात है, शायद किसी को यकीन ना आये। अभी मेरे पास एक साथ दो लाख रूपये रख गए, अगले रोज बुलाकर मैंने वापिस कर दिये। फिर लाये, फिर शायद ज्यादा रूपये लाये। मैंने पूछा भी, फिर मैंने कहा जो भी तुम लाये, वापिस ले जाओ तुम, इसरूपये की मुझे जरूरत नहीं है; उन लोगों की नहीं है जो कि ईमानदारी से रुपया नहीं कमाते हैं।

तो दोस्तों, ये छोटी–छोटी दस्तकारी क्यों खत्म हो गयी? बड़े कारखाने चलाने वालों के हक में। दिल्ली में और यहां भी सड़कों पर जो औरतें कंकड़ कूटती हैं, उनसे जाकर पूछो, क्या उनके बाप–दादे कंकड़ कूटते थे सड़क पर ? नहीं, कोई न कोई दस्तकारी थी, कोई न कोई घर पर काम होता था आजादी के साथ, जो खतम हो गया, आज वो कंकड़ कूट रही हैं।

तो, महात्मा यह कहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाओ और दूसरी बात कहता था कि दस्तकारियों को जगाओ, पुनर्जीवित करो। बड़े कारखाने जितने लगेंगे यहां उतने पूंजीपति बढ़ेगें, उतनी बेरोजगारी बढ़ेगी। मिसाल के लिए कहता हूं। मान लो कि पांच हजार जुलाहे हैं। आजादी से एक–एक करघे पर काम करते हैं, तीन–चार रुपये रोज की आमदनी हो जाती है। आजाद हैं, कोई दूसरे के, किसी के मोहताज नहीं हैं। अब आप एक करोड़ रुपये का कारखाना लगा दीजिये। उस कारखाने में, जितना के दस हजार जुलाहे अलग–अलग कपड़ा बनाते हैं, वो कारखाने में एक हजार बल्कि पांच सौ आदमी उतना ही कपड़ा पैदा कर देंगे, जिनता कि दस हजार जुलाहे अलग–अलग करघों पर बनाते हैं। और, इनकी आमदनी तीन–चार रुपये रोज की बजाय 15 रुपये रोज की हो गयी। इन लोगों की बीस की भी होगी, लेकिन अब उधर एक पूंजीपति पैदा हो गया रुपया लेने के लिए, इधर सौ आदमियों को, पांच सौ आदमियों को 15 रुपये रोज की आमदनी होगी, 450 रू0 महीने की, लेकिन नौ हजार आदमी बेरोजगार हो गया। कौन रो रहा है, कहां है वो, उसकी कौन परवाह करता है?

तो गांधी जी कहते थे कि बेशक बड़े कारखाने लगाओ, लेकिन उन चीजों के लिए जो छोटे पैमाने पर न बन सकती हों, जो बड़े कारखाने में ही बन सकती हों, उनको लगाओ। मैं

बड़े कारखाने के खिलाफ इसलिए नहीं हूं क्योंकि बड़ा है। मुझको डर यह है कि जितना बड़ा कारखाना लगेगा, जितनी पूंजी लगेगी, जितना तकनीकी ज्ञान बढ़ता जाएगा, उतनी ही बेरोजगारी बढ़ती जाएगी और सेठों के प्राफिट्स बढ़ते जायंगे। असमानता बढ़ती जाएगी, बेरोजगारी बढ़ती जाएगी।

महात्मा का कहना सही निकला। आज बिल्कुल यही हो गया है। हमारे लीडरों ने कर्ज दुनिया भर से ले लिया और हिन्दुस्तान भी जितना टैक्स लगाया वो ज्यादातर बड़े कारखाने के लिए खर्च किया और गांव पर उतना खर्च नहीं किया। साढ़े सत्रह फीसदी जमीन में सिंचाई का प्रबंध था जब अंग्रेज गये। अगर आज 35 फीसदी जमीन में, रकबे में सिंचाई का इंतजाम हो जाता तो चाहे साल भर तक बारिश न हो, आपको कोई कष्ट नहीं होता। कोई कहर पड़ने का और अकाल पड़ने का सवाल पैदा नहीं होता। आपके मध्य प्रदेश में तो सिंचाई का प्रबंध बहुत कम है। पंजाब में 80 फीसद जमीन सिंचित है आज, वो सबसे मालदार सूबा है। लोग कहते हैं कि कारखानों से देश मालदार होंगे, पंजाब में एक बड़ा कारखाना नहीं है, सबसे मालदार सूबा है। बिहार में सबसे ज्यादा बड़े कारखाने हैं और सबसे गरीब सूबा है।

ये हैं सीधे मोटे सच्चे आंकड़े, क्योंकि वहां के खेत की पैदावार अच्छी है पंजाब के किसान की, बिहार के किसान के खेत की पैदावार सबसे कम है। तीन सूबे सबसे ज्यादा गरीब हैं। सबसे ज्यादा गरीब बिहार, दूसरे नम्बर पर यू0पी0 और तीसरे नम्बर पर मध्य प्रदेश, चौथे नम्बर पर उड़ीसा। तो, बिहार में तो सबसे ज्यादा कारखाने हैं, क्यों नहीं मालदार ? गांधीजी कहते हैं न, बिल्कुल सही कहा कि पहले खेत की पैदावार पर जोर दो। गांव के लोगों के पास क्रयशक्ति आये, पैसा आये, तब वो सामान खरीदें, तब कारखाने लगायें, तब आर्गेनाइज्ड ग्रोथ होगी, तब सच्चा विकास होगा, वरना तो आर्टीफिशियल विकास होगा, केवल कारखाने के बनने से देश मालदार होने वाला नहीं।

तो वो चाहते थे कि छोटी–छोटी दस्तकारियां फलें, बढ़ें, बनें। हम भी यही चाहते हैं, यही दो हमारे प्लांस हैं, यही दो प्लेटफार्म हैं। हमने यह तय किया हुआ है। हमने पार्टी में विकास के बाबत तय किया था। जनता पार्टी ने, मेरी बात तो मंजूर की, उस पर अमल नहीं किया। मैंने कहा कि खेती के बढ़ाने के लिए तो 20 फीसदी रुपया दिया जाता रहा है। कारखानों पर 24 फीसदी दिया जाता रहा। सरदार पटेल के सामने जब पहली योजना बनी थी– खेती के विकास के लिए 37 फीसदी रुपया था, पहली योजना में। बड़े कारखानों के लिए पांच रुपए था, पांच परसेंट था। दूसरी योजना में 37 को घटाकर 18 कर दिया गया, बड़े कारखानों पर बढ़ाकर 5 को 24 कर दिया गया। बिजली जितनी पैदा होती है, चाहे डैम गांवों में लगे हुए हों, लेकिन अब बढ़ते–बढ़ते 14 फीसदी जमीन में पावर जो पैदा होती है, वो केवल खेती के काम आती है। दो–तिहाई बिजली बड़े कारखानों पर खर्च होती है और अब तक दो–चार साल पहले बड़े कारखानों पर जो बिजली खर्च होती थी, उसकी कीमत कम लेती थी गवर्नमेंट और किसानों पर जो खर्च होती थी उसकी कीमत ज्यादा लेती थी। यह हमारी गौरमेंट है जी!

हम इस नक्शे को बिल्कुल बदल देना चाहते हैं। हम खेत की पैदावार पर इस लिए जोर देना चाहते हैं दोस्तों! वो समय आने वाला है, मैं भविष्यवाणी कर देता हूं कि दस साल के अन्दर आप देखोगे कि दुनिया के बहुत से देशों में अन्न की कमी हो जाएगी और जिन देशों में यह बिसात होगी कि अन्न को बाहर भेज सकें, उनके हाथ में बड़ी पॉलिटिकल पावर

होगी। हमारे देश की भूमि बहुत अच्छी है, हमारे देश के अन्दर सूरज की किरणें बहुत पड़ती हैं, बहुत जल्दी फसल को पका देती हैं। हमारे यहां पानी की कमी नहीं है, हम उसका प्रबंध करना नहीं जानते हैं, वरना हमारे यहां इतनी पैदावार हो सकती है कि आधी दुनिया को हम खिला सकते हैं, हिन्दुस्तान की बात तो रही दूसरी।

मेरा, मेरी पार्टी के लोगों का नक्शा यह है कि हम खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर देंगे। सब लोगों का जब काम इससे हो जाए, तो हम इसका एक्सपोर्ट करेंगे और एक्सपोर्ट मार्केट से रुपया कमायेंगे और तब अपने यहां छोटे–मोटे कारखाने लगेंगे, लेकिन पहला नम्बर खेती की पैदावार का, दूसरा नम्बर दस्तकारी का, बड़े कारखाने का नम्बर तीसरा होगा हमारे नक्शे में दोस्तों।

अगर मेरा बस चला, मेरे साथी मुझसे राजी हुए, तो मेरा इरादा यह कानून बनाने का है कि जो हमारे देश के अन्दर ऐसे बड़े कारखाने लगे हुए हैं, जो वो सामान पैदा कर रहे हैं, जो छोटी स्केल, छोटे पैमाने पर बन सकती हैं, छोटी मशीन पर बन सकती हैं, वो छोटी ही मशीन पर बनने दिया जाए और जो छोटी मशीन से भी नहीं, बल्कि हाथ से बन सकता है, वो हाथ से बनने दिया जाए। तो जो कारखाने ऐसा सामान पैदा कर रहे हैं कि दस्तकारी से, हस्तकला से बन सकता है, उनको हमारा हुक्म होगा कि कारखाने बेशक चलाओ, गौरमेंट नहीं लेना चाहती, पूंजी इसमें लग गयी है, बर्बाद भी इनको नहीं करना चाहती, लेकिन तुम्हारा बना हुआ सामान हिन्दुस्तान के अन्दर नहीं बिकेगा, बाहर बेचो। हिन्दुस्तान में अब हाथ का बना हुआ सामान बिकेगा। (तालियां)

टेक्सटाइल कमेटी की रिपोर्ट है सन् 1953 की, जिसमें उन्होंने यह लिखा है कि कारखाने, कपड़े के कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उसको 12 करघों के द्वारा बारह आदमी पैदा करते हैं। आज दस लाख आदमी लगा हुआ है, टैक्सटाइल इंडस्ट्री में, सबसे बड़ी इंडस्ट्री है यह। मान लो, इसमें छह लाख लगा हुआ है वीविंग में, चार लाख स्पिनिंग में, स्पिनिंग मिल्स को हम रखना चाहेंगे। लेकिन छह लाख, जो कपड़े को बनाने, बुनने की मिल हैं, उनको हमारा इरादा है कि वो अपना सामान बाहर बेंचे। तो, जो छह लाख आदमी कपड़ा बुन रहे हैं, बड़ी मशीनों में उस कपड़े को बनने के लिए 12 छक्का 72–72 लाख आदमियों को काम मिलेगा, बनिस्बत छह लाख के। जो लड़के गांवों में, शहरों में, मारे–मारे फिरते हैं, उन सब को रोजगार मिल जाएगा दोस्तों! (तालियां)। न गौरमेंट को पूंजी लगानी पड़ेगी, न गौरमेंट को बिजली का इंतजाम करना पड़ेगा, न गौरमेंट को टेक्नीकल नो हाऊ जिसको कहते हैं, तकनीकी ज्ञान की जरूरत पड़ेगी। अभी कुशलता हमारे लोगों में पुरानी बची हुई है। लेकिन हमारी गौरमेंट क्या करती रही है, कांग्रेस के लीडरों की, हमारी। ये हाल हो गया है धीरे–धीरे कि मशीन से काम करना उन्नति का द्योतक है, हाथ से काम करना पिछड़ेपन का और गरीबी का द्योतक है। तो, हर चीज के लिए कारखाना लगाओ, मशीन लगाओ, ताकि रूस के और अमरीका के लोग कहें कि वाह! देश तरक्की कर रहा है।

रोटी सबसे पहली जरूरी चीज, कपड़ा नम्बर दो, मकान नम्बर तीन। कपड़े के लिए तो मैं आपको बता ही चुका हूं कि बहुत से लीडर गांधीजी के सामने चरखा चलाते थे, अब भी चरखा चला रहे हैं, अपने आपको गांधीवादी कहते हैं, लेकिन उनके दिल में मिल का मालिक बसा हुआ है, वो गरीब जुलाहा बसा हुआ नहीं है, दोस्तों!

ये तो कपड़े की बात हो चुकी, अब रोटी भी मशीन से बनने लगी है यहां पर। हमारी तो मां और बहू–बेटियां बनाती थीं, बहन हमारी बनाती थीं, अब गवर्नमेंट बेकरी भी लग गयी है। छोटे–छोटे दुकानदार बिस्कुट और वो बनाते थे, क्या नाम केक वेक, न मालूम क्या क्या कहलाती हैं, अपने आटे से, आप आटा दो तो आपको बना के भेज देंगे। अब गवर्नमेंट बेकरी लग गयी। अब वो कानपुर का मुझे मालूम है, एक बेकरी वहां लग गयी है, हजारों लोग बेरोजगार। क्यों? क्या फायदा हुआ? किसका फायदा हुआ? शायद लखनऊ में भी लग गयी है, बॉम्ब में, इन्दौर का मुझको मालूम नहीं।

एक श्रोता दर्शक– इन्दौर में भी लग गयी है।

श्री चरण सिंहः इन्दौर में भी लग गयी है, क्यों, ज्यादा लजीज होती है, रोटी मशीन की बजाय हाथ के, क्या अकल की बात है?

और रह गया मकान। इन्दौर के लोगों, आपको मालूम नहीं है, मकान बनाने का भी कारखाना लगवा गयी थीं इंदिरा जी, मकान बनाने का कारखाना कह रहा हूं। प्रीफैब्रीकेटेड हाउसिंग फैक्टरी, बना–बनाया मकान बनाने का कारखाना। सुल्तानपुर एक गांव है देहली के पास, वहॉ लगा हुआ है। मैंने अभी हुकम दिया है कि उस कारखाने को बंद करो (तालियां)। क्यों? क्या जरूरत है मकान बनाने के लिए कारखाने की? ये हमारे सैकड़ों–करोड़ों दस्तकार हैं, उनका क्या होगा? ईंट पाथने वालों का क्या होगा, ईंट ढोने वालों का क्या होगा? वो छोटे दुकानदार हैं, उनसे सामान गांव में खरीदेगा मकान बनाने के लिए, बहुत–सी छोटी–छोटी चीज या इन्दौर से खरीदेगा, उनका क्या होगा? बढ़ई का क्या होगा? लुहार का क्या होगा? राजगीर का क्या होगा? ये खाली बैठे क्या करेंगे? क्या फायदा होगा?

इजिप्ट में, मिस्र में पिरामिड हाथ से बना दी थी लोगों ने, अपने देश के अन्दर तीन सौ बरस पहले दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत बना दी थी, ताजमहल जिसका नाम है, हमारे दस्तकारों ने हाथ से बना दी थी। लेकिन हमें अब अपने रहने के लिए मकानों की जरूरत है कारखाने के लिए, इससे ज्यादा शर्म की और बेवकूफी की कोई बात हो नहीं सकती। बेवकूफी की बात है, जानबूझकर हम बेरोजगारी अपने लोगों में पैदा कर रहे हैं।

तो दोस्तों, ये तो मैंने तीन नीति की बात बताई। ईमानदारी की बाबत मैं कह ही चुका हूं कि अगर आपके म्यूनिसिपल कारपोरेशन का मेयर ईमानदार नहीं है, तो जो मेम्बरान ईमानदार हैं, उनमें से कुछ बहुत ही बहादुर और ईमानदार, सख्त डिटर्मिनेशन के हों, तो वो ईमानदार बचेंगे, लेकिन अगर उनमें वो कमजोर होंगे तो धीरे–धीरे वो भी बेईमान हो जाएंगे और जितने कारपोरेशन के राज कर्मचारी हैं, उनमें शायद ही बिरला कोई ईमानदार बचेगा।

तो मैं आपको यह कहता हूं और कुछ नहीं, गांधीजी ने क्या कहा था? गांधीजी के पास क्या रखा था ? बेशक बुद्धिमान बहुत, लेकिन उनको जो काम का फल, जो उनको सफलता मिली, इतने बड़े देश को जगाने में, उनका नाम हजारों बरस तक जिंदा रहेगा। बुद्धि तो उनकी पचास फीसदी थी, 50 फीसदी उनका त्याग था, उनकी लंगोटी थी, जिसकी वजह से यह देश उठ गया (तालियां)। लेकिन जब से वो गया, धीरे–धीरे हम नीचे गिरते चले गये।

मैं, मेरी पीढ़ी के लोग जब स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, मैंने सन् 1919 में मेरठ के स्कूल से हाईस्कूल पास किया। महात्माजी सीन पर आ गए थे सन् 1918 में, 19 में अमृतसर में वो जलियांवाला बाग का किस्सा हुआ, 13 अप्रैल को और उससे पहले 30 मार्च को जो बड़ा बाजार है, वहां का, दिल्ली का, चांदनी चौक में गोली चली, जब स्वामी श्रद्धानन्दजी सीना

तानकर खड़े हो गए थे, ब्रिटिश तोप के सामने। मैं टैन्थ का इम्तहान दे रहा था, उससे एक साल पहले उनकी लिखी हुई किताब, मैं नाम भूल गया हूं उनका 'भारत भारती'। झांसी के पास चिरगांव के पास रहने वाले जो हमारे राष्ट्रकवि हुए हैं, मैं नाम उनका, मैंथिलीशरण गुप्त, उससे मैंने देशप्रेम सीखा, उस किताब से 'भारत भारती' से, और फिर महात्माजी आये।

तो, मेरी पीढ़ी के लोगों के सामने क्या उदाहरण थे, कौन से आइडियल थे, कौन से आदर्श पुरूष थे, जिनमें हम सब लोग, जिनमें कोई अंकुर देशप्रेम का था, जिनकी हम नकल करना चाहते थे। महात्मा गांधी और गोपालकृष्ण गोखले और लोकमान्य तिलक, पं0 मालवीय, लाला लाजपतराय, ये शानदार हस्तियां थीं और तीन संन्यासी थे, उस वक्त कोई जिंदा नहीं था, जिस वक्त हम कालेज और स्कूल में पढ़ते थे। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, जिनकी हम लोग जीवनी पढ़ा करते थे। आज मुझको सबसे बड़े दुःख की बात यह लगती है कि आज जो हमारी नयी पीढ़ी है, इन्दौर में कौन नेता है, कौन जनसेवक है, जिसके कदमों पर चलने की हमारी नयी पीढ़ी कोशिश करे, आज की, नहीं, कोई नहीं, कोई नहीं रह गया।

तो, जिस देश के लड़कों में आइडियलिज्म न हो, आदर्शवाद न हो, त्याग की भावना न हो, देश को बड़ा बनाने का स्वप्न न देखते हों, तो देश कैसे उठेगा? लेकिन आज है यह स्थिति।

दोस्तों, मैंने यह पार्टी बनायी इस ख्याल से, मैंने कोशिश ये की थी कि बराबर कांग्रेस का राज तीस साल से चल रहा था, धीरे–धीरे वो भ्रष्ट हो गये थे। उनको डर नहीं था कि हमको कोई पार्टी निकाल सकती है, उनको वोट कुल मिलाकर कम मिलती थी, बनिस्बत सारी पार्टियों की मिलाकर, उससे कम मिलती थी, लेकिन वोट बंटी हुई थी। तो मैंने कई पार्टियों को मिलाकर भारतीय क्रांति दल पार्टी बनाई, भारतीय लोकदल बनाया। उसकी सदस्य संख्या 74 थी। तीन पार्टियां थीं– जनसंघ के हमारे दोस्त, सोशलिस्ट पार्टी के दोस्त और कांग्रेस संगठन के दोस्त, ये राजी नहीं थे।

मैं और मेरे दोस्त कई–कई बार इन लोगों के पास गये कि मुझे बतलाओ कि अकेले रहकर इंदिरा को हरा सकते हो? तो पंचायती राज कैसे चलेगा ? अगर पार्टी अदलती–बदलती न रहे और देश के अन्दर लगभग दो बराबर की और ज्यादा से ज्यादा तीन पार्टियां होनी चाहिए। मैंने उनसे कहा कि लीडर आप बन जाइये, तीन बार मैं गया मोरारजी भाई के पास कि लीडर आप बन जाइये, आप मुझसे उमर में बड़े हैं। आप भी जब कांग्रेस में थे, हम तो आपको अपना लीडर ही मानते थे, अगरचे आपकी हमारी आपस में मुलाकात नहीं थी कोई। झंडा कुछ रखिये, निशान कुछ रखिये, पार्टी का नाम कुछ रखिये, मेरी केवल एक शर्त है कि पार्टी का प्रोग्राम वो होगा, जो हमारे राष्ट्रपिता ने हमको बतलाया था और बाकी सारा आपको सुपुर्द है।

जनसंघ के लोग नहीं माने, बहुत कहा तो मुझसे बोले कि आप देवरस साहब से मिलो, बालासाहब देवरस। मैंने उनको चिट्ठी लिखी। उन्होंने कहा, 18 अक्टूबर सन् 74 को मैं आ रहा हूं कानपुर। मैं लखनऊ से उनके पास गया, घंटे भर मैंने बातें कीं। मेरी दलीलों का उनके पास जवाब नहीं था। उन्होंने कहा कि मैं आपसे सहमत हूं, जनसंघ के लोग क्या कहते हैं, ये मुझसे पूछा। मैंने कहा, जनसंघ के लोग तो आपका नाम लेते हैं, तो बोले कि ये तो गलत कहते हैं। मैंने कहा नहीं, गलत नहीं कहते हैं। जो आप चाहोगे वही होगा, ऐसा हमने

सुना है। तो उन्होंने कहा, महाराष्ट्र में मेरा प्रोग्राम है, नवम्बर के महीने में। मैं महीने भर बाद उनसे बात करके आपको चिट्ठी लिखूंगा। लेकिन मेरे पास कोई चिट्ठी नहीं आयी।

सोशलिस्ट पार्टी के चंद लीडरान हैं, जिनका कोई फॉलोअर नहीं है हिन्दुस्तान में, बहुत–थोड़े फॉलोअर हैं। इन तीनों ने आसरा पकड़ रखा था जयप्रकाश नारायणजी का। 22–23 नवम्बर सन् 74 को जय प्रकाश नारायणजी दिल्ली में आये। मैं, पीलू मोदी, राजनारायणजी और बीजू पटनायक, चारों हम जयप्रकाश नारायणजी से मिले। मैंने कहा, अब आप एक पार्टी बनाइये और आप लीडर होइये, आप नेतृत्व सम्भालिये। और जो आपकी इच्छाएं हैं पूरी हो जाएंगी सब। समग्र रेवोल्यूशन (सम्पूर्ण क्रांति) हो जाएगा।

उन्होंने कहा, मैं एक पार्टी के साथ अपने आपको वाबस्ता करना नहीं चाहता, मेरी मंशा पूरी नहीं होगी। मैंने कहा, मंशा आपको करनी है, समग्र रेवोल्यूशन, क्रांति करनी है, वो आयेगी जब राजनीतिक पावर आयेगी और क्योंकि देश में डेमोक्रेसी है, तो राजनीतिक पावर आयेगी, बैलेंस के जरिये। एजिटेशन से लोगों की एजूकेशन तो होगी, प्रोसेशन और आंदोलन से लोगों का प्रशिक्षण तो होगा, लेकिन राजसत्ता का हस्तान्तरण तो बैलेट के जरिये ही होगा। अगर आप एक पार्टी बना लें, उसके लीडर हो जाएं, अगले इलेक्शन में आपकी कामयाबी होगी और देश में चाहे जो कुछ आप करना। लेकिन मेरी बात उन्होंने नहीं मानी। आपको बतलाता हूं, गिरफ्तार होने के बाद जल्द ही बीमार हो गये और रिहा हुए मार्च, 76 में। एक अखबार 'स्वराज' नाम का निकलता था लंदन से, सरे कोई वहां का मुहल्ला है, वहां से। हिन्दुस्तान के लोग वहां बसे हुए थे, जो कि यहां के आन्दोलन का समर्थन कर रहे थे। जय प्रकाश नारायण जी से उनके किसी आदमी ने इन्टरव्यू ली। उस इंटरव्यू को पढ़ लो। 12 मार्च सन् 76 का है, तो 'स्वराज' मेरे पास उस अखबार की कॉपी रखी है, जिसमें जयप्रकाश नारायणजी ने यह माना कि मेरे से गलती हुई जो मैंने आंदोलन शुरू किया। मुझे नहीं मालूम था कि इंदिरा डिक्टेटर हो जायेगी, इससे तो मैं सब लोगों को मिलाकर इलेक्शन लड़ता तो शायद बेहतर होता।

दोस्तों, इमरजेंसी लग गयी। हम जेल में ठूंस दिए गए। जेल के अन्दर जनसंघ के दोस्तों से, जनसंघ के और सोशलिस्ट पार्टी के दोस्तों से बातें हुई, वो करीब–करीब तैयार हो गए जेल से छूटकर एक पार्टी बनायेंगे। लेकिन मुरारजी टस–से–मस नहीं हुए। 18 जनवरी को इंदिराजी ने घोषणा कर दी चुनाव की, सब लोगों को छोड़ दिया, इमरजेंसी करीब–करीब उठा ली। तब उनको लगा कि शायद अब कुछ सम्भावना उनकी बढ़ जाएगी, तब जा के राजी हुए।

उसके बाद उधर जब टिकट मिल रहे थे, तब जगजीवनराम जी को कोई आशा नहीं थी कि उनकी मिजॉरिटी आ सकती है, तो उन्होंने एक पार्टी बनायी सी0एफ0डी0। तीसरी जनवरी को कांग्रेस छोड़ी। तीन–चार आदमी उनके साथ थे, बहुगुणा वगैहरा और कोई आदमी उनके साथ नहीं था।

मैंने उनसे कहा अलग पार्टी क्यों बनाते हैं, आपने रेजोल्यूशन पेश किया इमरजेंसी का, जबकि आप गृहमंत्री नहीं थे, ये एक तरह से गुनाह है। आपके लिए लाजिमी नहीं था; और बहुगुणा ने 32000 आदमी यू0पी0 में जेल में डाले हैं, आबादी के हिसाब से 17 हजार ही डालने चाहिए थे– एक लाख दो हजार सारे हिन्दुस्तान में थे, आबादी छठी थी, उन्होंने 32 हजार जेल में डाले। बड़ा उत्साह दिखाया। उनको निकाल दिया इंदिरा ने, उनको शक हो

गया उनकी नीयत पर। तो मैंने कहा, आप दोनों माफी मांगो जनता से कि जो आपने पाप किया है और जनता पार्टी में सीधे शामिल हो जाओ। लेकिन अलग पार्टी बनाने की जरूरत नहीं है। नहीं माने।

खैर, इलेक्शन हुआ। हमने लीडर उनको मान ही लिया था पार्टी का, अब प्राइम मिनिस्टर की बात आयी। मैं 19 मार्च को बीमार हो गया। अपने हल्के में 20 मार्च को जाना चाहता था पोलिंग देखने के लिए, रास्ते में से लौट आया। और मुझे अस्पताल में, विलिंगडन हॉस्पिटल में दाखिल होना पड़ा। सोशलिस्ट पार्टी के नेता एन0जी0 गोरे, अटल बिहारी बाजपेयी – जनसंघ के नेता, मेरे पास अस्पताल में पहुंचते हैं और यह कहते हैं कि हम जगजीवनराम को प्राइम मिनिस्टर बनाना चाहते हैं। मैंने कहा, वैसे तो जो उनके कारनामें हैं, मैं बताना नहीं चाहता हूं, सब को मालूम हैं, लेकिन काय बात का इनाम दे रहे हो, इस बात का कि प्रस्ताव पेश किया था इमरजेंसी का ? क्या कहेगी दुनिया, आपके जहन में थूकेगी। मैंने कहा अटलजी, जब उनको प्राइम मिनिस्टर बनाकर बैठोगे, आप लोग सभा में, तो कांग्रेस वालों की आलोचना कर सकोगे कि इंदिराजी ने लगायी थी वो क्या नाम इमरजेंसी? तो वो कहेंगे, वो लीडर आपका प्राइम मिनिस्टर आपने बना रखा है, जिसने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया। क्या जवाब होगा ?

अब मेरे पे रहा नहीं गया, मैंने कहा अटलजी, आप उस पार्टी के लीडर हो जो हिन्दू संस्कृति की बात करती है। क्या हिन्दू संस्कृति इस तरह के नेता का तकाजा करती है कि इस तरह का, मैं आपको बताना नहीं चाहता हूं, मैंने उनको भी उस वक्त नहीं कहा। आप हिसाब लगा लो सब, तरह का आदमी होना चाहिए क्या कोई प्राइम मिनिस्टर ?

मैंने कहा, मैं हरगिज–हरगिज तैयार नहीं। मैं जानता हूं कि मोरारजी से मेरे विचार मिलने वाले नहीं हैं, गांव के उठाने में और गरीब के तई हमदर्दी रखने में और उसके मसले हल करने के बाबत। उन पर असर है, उनके दिमाग में भरा हुआ है, उनका बाप था मिल–मालिक। लेकिन फिर भी 19 महीने वो जेलखाने रहे हैं, सात बरस मुझसे बड़े हैं। मैं जगजीवनराम के मुकाबले में उनको प्राइम मिनिस्टर बनाना पसन्द करूंगा।

बस, बात खतम हो गयी। मैंने जयप्रकाश नारायण जी, आचार्य जी को चिट्ठी लिखी। मैं और मेरे साथी, हम मोरारजी को पसंद करते हैं प्राइम मिनिस्टरी के लिए। इस तरीके से वह प्राइम मिनिस्टर तो हो गये। उसके बाद होते ही डिक्टेटर हो गए। इसमें बेवकूफी के कहो, मेरी हठवादिता के कहो, मेरे विचार के कहो, दो नतीजे निकले। मैं डिक्लेयर कर दिया गया हरिजनों का दुश्मन। एक बात। दूसरी तरफ मोरारजी हो गये प्राइम मिनिस्टर, नहीं, डिक्टेटर। यहां तक कैबिनेट बनाने तक में उस आदमी से भी पूरा मशविरा नहीं किया, जिसने उलको उस ऊॅचाई पर बैठा दिया था, उनका स्वप्न सारी जिंदगी का पूरा कर दिया था। 52 आदमी उनके कुल आये थे। हमारे जनसंघ के 80–80 आदमी आये थे। हमारे चार–चार, जनसंघ के एक लीडर ने इस्तीफा दिया था, उनके तीन ही रहे, हमारे चार और जिसके 52 थे उसके छह और प्राइम मिनिस्टर। कौन सी ईमानदारी ? अगर योग्यता थी तो आप बीस के बीस अपने बना लेते। लेकिन योग्य आदमी वो नहीं थे कि हमारे पास योग्य नहीं थे और उनके पास योग्य थे। उनके ऑफिस का सेक्रेटरी, केरल का रहने वाला। बिहार के सीधे–सादे किसानों से हमने चुनवा के भेज दिया। अब बोलो वो बिहार को रिप्रेजेंट करता या केरल को ? वो भी मिनिस्टर हो गया, आपका ऑफिस का सेक्रेटरी। ये उन्होंने काम किया।

धीरे–धीरे एक गलती हमसे ये हुई, मेरे दोस्त राजनारायण से भी कि मेरा जनमदिन मना बैठे थे, 23 दिसम्बर, 1977 को। मैंने मना किया था। इससे गलतफहमी पैदा होगी। नहीं माने। आसपास के 25 लाख 30 लाख किसान इकट्ठे हुए। मोरारजी ने वादा किया था कि मुझे शुभकामना देंगे, जनसंघ के नेता भी आये थे। उन्होंने भी किसानों की हिम्मत बढ़ायी और यह कहा, हम आपके मसले हल करेंगे, वगैरा–वगैरा। मोरारजी ने वादा किया था, लेकिन आये नहीं। उनको जो मालूम हुआ कि 25–30 लाख आदमी मौजूद हैं, तो उनकी छाती पर सांप लोट गया ईर्ष्या का, दोस्तों! कहा कि आदमी शक्तिशाली मालूम होता है, इसके अहसान का बदला उतारना है।

उन्होंने अहसान का बदला यह उतारा कि जनसंघ से मिलकर मुझको और राजनारायण को कैबिनेट से निकाला। राजनारायण जी के खिलाफ झूठा चार्ज। मेरे खिलाफ चार्ज यह कि मैंने यह बयान दिया था कि स्पेशल कोर्ट्स बनाओ, स्पेशल प्रोसीजर बनाओ, मामूली अदालत दस साल तक इंदिरा को जेल नहीं भेज सकती। मैंने कहा था, जनता आज आपको–हमको नपुंसक समझती है। मैं होम मिनिस्टर था, अगर नपुंसक के मायने किसी आदमी के नपुंसक के इस सन्दर्भ में, तो मैं भी नपुंसक ही था। लेकिन मोरारजी को अपना नपुंसकपन पसन्द नहीं था। लिहाजा उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा और बाद में सारी गवर्नमेंट को कह दिया। मैंने यूं कहा कि 17 जून को वापिस आते हैं अमरीका से, अखबार वाले पूछते हैं, तीन बार उनका बयान है कि मामूली अदालतों से मुकदमा चलाऊंगा मैं।

तो, 22 जून को आचार्य कृपलानी का बयान आता है कि मुझे मालूम होता है कि मोरारजी ने इंदिराजी से फैसला कर लिया, इसलिए ये मामूली अदालतों में चलाना चाहता है, मामूली अदालतों से उनको सजा हो ही नहीं पायेगी। यह आचार्यजी की रीडिंग है। 23 जून को मैंने 29 जून को बयान निकाला, उनको कोई हक नहीं था यह बयान देने का कि हम स्पेशल कोर्ट्स नहीं बनायेंगे। होम मिनिस्टरी का मामला था, मैं होम मिनिस्टर था, बीमार बेशक था, मुझसे डॉक्टर ने यह कहा था कि आप अब खतरे से बाहर हैं, अस्पताल में ज्यादा रहना ठीक नहीं है। देश में तरह–तरह की अफवाह आपसे मुताल्लिक होंगी। सूरजकुंड में एक रेस्ट हाउस है। वो देखकर आये और एक डाक्टर को और एक नर्स को चौबीस घंटे उन्होंने मेरे पास छोड़ा।

दोस्तों! विचार करो, कैसा हमने प्राइम मिनिस्टर बना दिया। मैंने बीमारी में उन्हें प्राइम मिनिस्टर, बीमार पड़ा हुआ था मैं, सख्त, उस वक्त मैंने उनको प्राइम मिनिस्टर बनाया और जब मैं बीमार था, तब उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा। इस छोटे दिल के आदमी को मैंने बना दिया। इसी सिलसिले में कहना चाहता हूं, जब 24 जून सन् 78 को मुझ पर कातिलाना हमला हुआ, तो 23 दिसम्बर को, दूसरे जन्मदिन के बाद, जिसमें 50 लाख आदमी आये थे बिहार का एक आदमी आता था। उससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं है। मेरा ख्याल है उसके पीछे षड्यंत्र था। लेकिन मैं कुछ कहना नहीं चाहता हूं। उसे मजिस्ट्रेट से, यहां सेशन जज से अभी सजा हुई है। मेरे पर हमला करता है और हमारा प्राइम मिनिस्टर हमको टेलीफोन से भी यह नहीं पूछता है कि चरण सिंह, मैंने सुना कातिलाना हमला हुआ, तुम बच गये, मुझे बड़ी खुशी हुई जानकर। नो!

तो, एक और बड़ी गलती मुझसे यह हुई कि 15 जनवरी सन् 78 को भावनगर में उन्होंने एक बयान दिया था – जनता पार्टी की तरफ से एक बड़ी मीटिंग हुई। जनता पार्टी

का प्रेसिडेंट मीटिंग का प्रेसीडेंट था – कि मेरे लड़के पर रोज बेईमानी के चार्जेज अखबारों में छप रहे हैं, वे निराधार हैं। मैं तीन निष्पक्ष आदमियों का कमीशन नियुक्त करने को तैयार हूं। लौटकर आये। हर अखबार में छपी यह खबर, 15 या 16 जनवरी, सन् 78 को। दो महीने से कुछ नहीं किया, क्योंकि बेटा यह कहता था कि आपने गलत बयान दे दिया। तो मैंने उनको चिट्ठी लिखी, 11 मार्च 78 को, आप खुद वादा करके आये, कमीशन मुकर्रर करो। तो मुझे चिट्ठी लिखते हैं कि झूठे इल्जाम लगते ही रहते हैं लोगों पर। सब पर लगते हैं। आपकी घरवाली पर झूठे इल्जाम, अब मेरे पास इल्जाम हैं। मैंने चिट्ठी लिखी कि महाराज, अब कांति के बाद पार्टी के खिलाफ कमीशन बाद में बिठाना, मेरी गृहणी के खिलाफ मैं चाहता हूं कि आप फौरन, आप अभी कमीशन बैठा दो, मैं जानना चाहता हूं (तालियां)।

मैं नहीं समझता हूं कि प्राइवेट लाइफ और पब्लिक लाइफ दो होती हैं। मेरी प्राइवेट और पब्लिक लाइफ एक ओपन बुक है। अगर मेरी वाइफ ने ही गलती की है, मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं। लेकिन हिम्मत कहां थी कमीशन बैठाने की, वो तो एक दलील में कह दिया।

ये मेरा बड़ा पाप हो गया दोस्तों, तो उन्होंने इस्तीफा लिया। इसके बाद मेरा अहसान उतारने के लिए तीन चीफ मिनिस्टर थे, अच्छे–से–अच्छे। बिहार में कर्पूरी ठाकुर, नाई के घर पैदा हुआ, उस जैसा त्यागी आदमी बिहार में नहीं है। वो साबित हो जाएगा किस किस्म का आदमी है, जो मैं आपको बताऊं कि उसका बाप आज भी नाई का काम गांव के अन्दर करता है। (तालियां)। लेकिन मोरारजी को, जनसंघ पसन्द नहीं था। वो था बीएलडी का नेता। रामनरेश यादव, एक निहायत ईमानदार आदमी है, यू0पी0 का चीफ मिनिस्टर, उसको हटवाया। मिल चुके थे, जनसंघ और कांग्रेस के लोग और मोरारजी वगैरा। देवीलाल को हटाया, उनके एम0एल0एज को बुलाकर दिल्ली में अपने मकान पर कहा कि कसम खाओ कि देवलीलाल को निकालोगे। तीनों चीफ मिनिस्टर निकाल दिये। हमको दोनों को पहले निकाला ही जा चुका था और राजनारायण जी बेशक संयम से काम नहीं लेते थे, अपने व्याख्यान देने में, बयान देने में। मैं कई बार बयान दे चुका था कि ऐसा नहीं करना चाहिए, नहीं माने। उनको वर्किंग कमेटी से हटा दिया। मैंने उसकी निन्दा नहीं की। तब उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पार्टी छोड़ना चाहता हूं। मैं मना करता था। मैंने कहा, पार्टी हमने बनायी है, हम इसे अभी नहीं छोड़ना चाहते, पार्टी के अन्दर लड़ेंगे। बहुत निन्दा की, मैंने इजाजत नहीं दी, दोस्तों।

राजनारायण जी को नहीं हटाया गया, क्योंकि अगर उन्होंने अवहेलना की थी डिसिप्लिन की, तो अगर इस बात पर हटाया तो जनसंघ के सब मेम्बरों ने यू0पी0 की असेम्बली में, सदन में खुलकर–बनारसीदास, जो हमारे चीफ मिनिस्टर थे, उनके खिलाफ वोट दी, अपनी गवर्नमेंट के खिलाफ और उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई, कोई कार्रवाई नहीं हुई, क्योंकि जनसंघ के दोस्त थे।

ये थे हमारे प्राइम मिनिस्टर, ये थे हमारे लीडरान चंद्रशेखर। तय कर लिया कि चरण सिंह को, उसके साथियों को, उनकी पार्टी के चीफ मिनिस्टरों को बर्बाद करना है। इलेक्शन पैनल जो बना है, तीन आदमियों का इलेक्शन पैनल बना है, दिल्ली में, उसमें हमारा आदमी नहीं था। सोशलिस्ट पार्टी का एक था, एक जनसंघ का था, एक कांग्रेस (ओ) का। क्यों ? और सोशलिस्ट पार्टी का कौन मेम्बर बनाया, जो कि म्यूनिसिपेलिटी से चुनकर नहीं आ सकता, जिसको राज्यसभा का मेम्बर मैंने अपने एमएलएज जो थे यू0पी0 में, उनसे चुनवा कर भेज दिया था। यू0पी0 में छह बनाये, कांग्रेस–ओ के दो, बीएलडी का एक, जबकि कांग्रेस–ओ

का लीडर सी0बी0 गुप्ता जमानत जब्त करा चुका था अपनी, अपने दस मेम्बर सन् 74 में चुनकर लाया था। राजस्थान में छह आदमियों का पैलन बनाया है, एक भी यू0पी0 का नहीं और हमारी पार्टी का एक भी नहीं। गुजरात में छह आदमियों का ही इलेक्शन पैनल है, एक भी आदमी बीएलडी का नहीं।

उनका इरादा यह था कि गवर्नमेंट से निकालो और पार्टी से निकालो। 26 जून को वापस आते हैं मोरारजी भाई दिल्ली, बाहर से और पत्रकार–सम्मेलन में कहते हैं। ये सन् 78 की बात कह रहा हूं कि एक, एक पत्रकार ने यह पूछा कि उन्होंने पार्टी छोड़ दी है, राजनारायण जी ने, अगर पुराने भारतीय लोकदल के और लोग भी छोड़ दें तो क्या होगा? 27 जून के अखबार उठाकर देखो आप लोग, इन्दौर के, जवाब यह होता है हमारे एक काबिल प्राइम मिनिस्टर का कि अगर सारे भी छोड़ देंगे लोकदल के, तो मेरे पर कोई असर नहीं पड़ने वाला, गवर्नमेंट और मजबूत हो जाएगी।

बस, यह बात बर्दाश्त नहीं हुई मेरे साथियों। उन्होंने कहा, चौधरी साहब, अब हमको इजाजत दीजिये। मैंने कहा, नहीं, अभी और ठहरो। इसी बीच में 9 जुलाई को चेयरमैन ले आते हैं नो कॉन्फिडेंस मोशन और मेरे साथी उनके खिलाफ वोट करते हैं। 97 आदमियों ने हमारे पार्टी छोड़ी। कहा जाता है कि दल बदला। नहीं। दल बदलने के लिए खुद उन्होंने जो कानून पेश किया, हमारी जनता गवर्नमेंट ने, जनता पार्टी की मंजूरी के बाद, एक कमेटी की सिफारिश के बाद, एक बिल बना, विधेयक बना मई 79 में लोकसभा में पेश हुआ और कमेटी का चेयरमैन मैं था गृहमंत्री होने के नाते, जिस वक्त यह कमेटी मैंने कायम करायी थी 78 के शुरू में। उसमें लिखा यह है कि अगर चौथाई से कम एक पार्टी के आदमी छोड़ें तो डिफेक्शन कहा जा सकता है। चौथाई से ज्यादा छोड़े तो वह विभाजन होगा, वह स्प्लिट होगी। हमने 299 आदमियों में से 97 ने छोड़कर लोकदल बनाया था, तो फिर जो आदमी उसको डिफेक्टर कहता है, वह बेईमान है, झूठा है और दुनिया को बरगलाना चाहता है। दोस्तों! (तालियां) इनसे पूछा जाए कि इन्होंने कई आदमी कांग्रेस के शामिल किए थे 77 से 79 तक, क्यों शामिल किये थे? एक–एक, दो–दो आदमी?

तो दोस्तों, इस तरह से हमको पार्टी से पूरी तरह निकालने का इरादा, जलील करने का इरादा किया, तब यह नौबत पहुंची। मुझको तकलीफ है। इससे देश के अन्दर एक राजनीति के क्षेत्र में बहुत अनसर्टेनिटी, अनश्चितता पैदा हो गयी। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मेरे सामने कोई रास्ता नहीं था।

मुझपर यह इल्जाम लगाया गया कि मैंने इंदिराजी से कोई सहायता मांगी है, हरगिज–हरगिज नहीं। 11 जुलाई से उनके बयान थे कि मैं अनकंडीशनली सपोर्ट करूंगी, नो कॉन्फिडेंस मोशन, बिला शर्त। मेरे पास आते हैं कमलापति त्रिपाठी और स्टीफेन। वे कहते हैं, हम आपको वोट देने के लिए तैयार हैं, लेकिन आप इंदिराजी को फोन कर लो। मैंने कहा, नहीं, हरगिज नहीं। मैंने मना कर दिया।

तो इंदिराजी तो खुद ही पार्टी तोड़ना चाहती थीं। मैंने कहा, तुम्हे दो लेसर ईविल में चूज करना है–– ये जनता पार्टी या हमारी गवर्नमेंट। तुम हमको लेसर ईविल समझते हो, तुम हमारे साथ एहसान नहीं कर रहे हो, लिहाजा मैं इंदिरा से कोई बात कहने वाला नहीं हूं और फोन करने वाला भी नहीं हूं।

जब 20 अगस्त को यह गौरमेंट हमारी बन गई और मैंने तीन हफ्ते के अन्दर पार्टी असेम्बली बुला ली, पार्लियामेंट बुला ली, 285 वोट हमारी आयी थीं, 234 आयी थीं मोरारजी की, राष्ट्रपति के सामने जब उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। इसलिए उन्होंने मुझको बुलाया और यह मशविरा दिया था कि हो सके तो महीने भर के अन्दर लोकसभा को बुला लो। वह मशविरा था, लाजिमी नहीं था, उनको कोई हक नहीं था। मैंने उस मशविरे के मातहत 20 अगस्त को लोकसभा की मीटिंग बुलायी। 19 तारीख की रात को, बीजू पटनायक मेरे दोस्त थे, उनसे कई बार यह मिला था इनका लड़का संजय। वो यह कहता था कि आपकी गौरमेंट बनने के बाद तो हमारे खिलाफ मुकदमे और तेजी से चलने लगेंगे। तो 19 तारीख की रात को साढ़े नौ बजे मेरे पास बीजू पटनायक का फोन आता है कि इंदिराजी यह कह रही हैं कि जिस विज्ञप्ति के जरिये हाईकोर्ट से किस्सा कुर्सी का मुकदमा चला गया सुप्रीम कोर्ट में, हाईकोर्ट में रहता तो चार साल चलाते, सुप्रीम कोर्ट में बहुत जल्दी तय होने वाला है, तो इस विज्ञप्ति को आप कैंसिल करा दें। मैंने कहा नहीं, हरगिज नहीं। उन्होंने कहा बीजू ने कि चौधरी साहब, विचार कर लो, फिर वो आपके खिलाफ कल राय देने वाली हैं। मैंने कहा कि मैंने विचार कर लिया।

श्री देवराज अर्स, कर्नाटक के चीफ मिनिस्टर कर्नाटक हाउस में ठहरे हुए थे, बीजू ने और और लोगों ने उनसे कहा। उन्होंने मुझको फोन किया कि चौधरी साहब, इसमें क्या हर्ज है? मैंने कहा, हर्ज है। मेरी राय में हर्ज है। दुनिया में कुछ मूल्य होते हैं जो प्राइमिनिस्टरी से भी बड़े हैं, लिहाजा मैं उससे कहने वाला नहीं हूं, मैं उस विज्ञप्ति को रद्द करने वाला नहीं हूं। मैंने यही कह दिया।

अगले रोज उनकी पार्लियामेंटरी बोर्ड की मीटिंग होती है, 20 तारीख को सवेरे। साढ़े आठ बजे मेरे पास खबर आती है कि उन्होंने तय किया है कि गवर्नमेंट को गिरायेंगे, जबकि बिला–शर्त के इमदाद करने का उनका वायदा था, उनका बचन था, वायदा तो कोई अदला–बदला होता नहीं है, हमारा तो कोई बदला नहीं था।

तो, मैंने साढ़े नौ बजे कैबिनेट की मीटिंग बुलायी। मैंने कहा, अब हम माइनोरिटी में हैं, हमको इस्तीफा दे देना चाहिए और इलेक्शन की मांग करनी चाहिए। कांस्टीट्यूशन के मुताबिक, रवायत के मुताबिक। जैसा कि मई 79 में ब्रिटेन का प्रधान मंत्री जेम्स कैलहन हार गया, पार्लियामेंट में, और हारने के बाद वो क्वीन से कहता है कि मैं इलेक्शन चाहता हूं, माइनोरिटी में था, लेकिन इलेक्शन हुआ। 54 के नवम्बर में, हमारे जो प्रेसिडेंट थे, ये डिप्टी चीफ मिनिस्टर थे हैदराबाद में, टी0 प्रकाशम चीफ मिनिस्टर थे कांग्रेस के, चंदूलाल त्रिवेदी गवर्नर थे। टी0 प्रकाशम और संजीवा रेड्डी की कांग्रेस पार्टी विधानसभा के सदन में हार गयी और हारने के बाद उन्होंने कहा चुनाव होना चाहिए, चुनाव हुए।

लिहाजा, हमने जब चुनाव के लिए कहा, तो राष्ट्रपति के सामने कोई रास्ता नहीं था, कोई रास्ता नहीं था। कानून में, कांस्टीट्यूशन में, यह लिखा हुआ है। पहले तो उनको अख्तियार कभी नहीं था, कुछ डिस्कशन छोड़ी हुई थी। इंदिरा ने जो कांस्टीट्यूशन बदल दिया था। यह उसमें लिखा था कि कोई रास्ता नहीं है, सिवाय जो कैबिनेट पास करे, उसको मानें।

तो दोनों तरीके से उन्होंने सही काम किया। तो उनको गालियां देना शुरू हो गईं। कहा जगजीवनरामजी ने कि मैं चमार हूं, मैं हरिजन हूं, इसलिए मुझको नहीं बुलाया (शोर)

ख्याल फरमाइये जरा, क्या बहस हुई और अपने राष्ट्रपति के लिए जितने अपशब्द चंद्रशेखर ने और जगजीवनराम जी ने किये इस्तेमाल, उससे ज्यादा शर्म की बात देश के लिए नहीं हो सकती।

दोस्तों, आप में से बहुत से जानते होंगे कि जगजीवनरामजी गरीब घर में जरूर पैदा हुए, लेकिन आज हिन्दुस्तान के कुछ इने–गिने सबसे मालदार आदमियों में उनकी शुमार है। फिर क्यों गरीबी की बातें करते हैं? क्यों लोगों को बहकाते हैं? हरिजनों को और गरीबों को ? वोट से क्यों डरते हो, इलेक्शन से ? मोरारजी इलेक्शन करा सकते थे, हमने इलेक्शन कराया, तो सब पार्टियों ने कहा कि इलेक्शन हो, जनता की राय ली जाए देश की परिस्थिति ऐसी है, सिवाय जनता पार्टी के मुखालफत करने के। उससे आप अंदाज लगा सकते हैं।

मैंने आपका बहुत समय लिया है। मैं माफी चाहता हूं कि इतने समय मैंने आपको बिठाया। लेकिन साथ ही मैं बहुत आपका एहसानमंद हूं कि आपने शांति से मेरी बात सुनी। अब मैं आपसे, हां, हमारे कल्याण जैन यहां के एम0पी0 हैं। मैं यह समझता हूं कि इनसे बेहतर खिदमतगार आपको नहीं मिलेगा (तालियां)। लिहाजा, अगर मेरी बातें पसंद हों और लोकदल का और भारतीय कांग्रेस का संगठन, गठन जो है और उनकी जो स्कीम और पालिसी आपको पसंद हो तो आप इस ईमानदार आदमी को चुनवाइये, राय दीजियेगा। (तालियां)।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे अब, बोलो, तो बोलो, बीच में मत बोलो। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैंने कथन समाप्त किया। अब मेरे साथ तीन नारे लगा दीजिये और मुझे जाने की इजाजत दीजिये ..

भारतमाता की जय
भारत माता की जय
महात्मा गांधी की जय
महात्मा गांधी की जय
लोकदल–कांग्रेस की जय
लोकदल– कांग्रेस की जय

————